छोटी सी भूल

मेरा नाम शमीम सिद्दीकी है, अभी तो मेरी उमर २९ साल है और अपनी शादी शुदा जिन्दगी में खुश हूं. बात उन दिनो कि है जब मैने कालेज मे नया नया एडमिशन लिया था. मै ऊंचे कद कि बहुत आकर्षक लड़की हूं, रंग गोरा, चेहरा लम्बा, बाल लम्बे, स्तन न ही ज्यादा बड़े न छोटे, जांघे साचे मे ढले हुए, गुलाबी होंठ. कालेज मे मै सबसे ज्यादा खुबसुरत लड़की थी. कही चक्कर नही था, वैसे भी मुस्लिम होने के कारण घर मे कुछ ज्यादा ही बंदिशें थी. पर जैसे ही कालेज का खुला पर्यावरण मिला मुझे भी अफेयर का चस्का लगने लगा. एक हिन्दु लड़के 'राज' ने जब प्रपोज किया तो मना नही कर सकी. हम ज्यादतर कालेज मे ही मिलते थे पर १ महीने के बाद भी हमारे बीच किस के अलावा कुछ ज्यादा न हो सका.

कालेज का एंवल फंक्शन था, राज ने कालेज से पहले जिद करने लगा कि मैं उसके साथ बाहर घुमने चलुं. मुझे ऐसी बातो से बहुत डर लगता था पर उसने जब ज्यादा ही जिद की तो मैं तैयार हो गई. हम उसकी बाईक से मेरे घर के पास एक निर्माणधीन कालोनी मे आ गये. कालोनी के सारे घर बन चुके थे, बस गेट और खिड़किया नही लगी थी. हम कोने वाले घर मे घुस गये. अंदर आते ही उसने मुझे बांहो में भर लिया और मेरे होंठो को चुमने शुरू कर दिया. पहले तो मैं कस्मसाती रही पर फिर खुद को ढीला छोड़ दिया. वो काफी देर तक मेरे होंठो को चुमता रहा और फिर उसने मेरे कपड़ो के अंदर हाथ डाल कर मेरे स्तनो को थाम लिया और हलके हलके दबाने लगा. १० मिनट तक वो मेरे स्तनो से खेलता रहा फिर अचानक उसने मेरी सलवार मे हाथ डाल दिया. उसकी उंगली मेरी योनि तक पहुंच गया और वो दरारो को महसूस करने लगा. कुछ देर तो मैं कुछ नही बोली फिर लगा कि अभी कुछ नही बोली तो कुछ बोलने के लिए बचेगा ही नही. मैने झटके से उसे अलग किया और उससे कहा कि और नही फिर कभी. वो खीज गया था पर मैने प्यार से उसके होंठो को चुमा और हाथ जोड़ कर कहा, "जान प्लीज, आज नही!" वो मुस्कुराया और बोला कि ठीक है चलो घर छोड़ देता हूं. मैने उससे कहा कि मेरा घर पास ही है और मैं चली जाऊंगी. उसने मुझे बाय कहा और चला गया.

उसके साथ न जाने का दो कारण था, एक कि कोई भी मुझे उसके साथ देख सकता था और उसके छुने से मै गरम हो गई थी सो मै खुद को ठंडा करना चाहती थी आप्राक्रितिक तरीके से. सम्भोग तो मै भी करना चाहती थी पर उस से डर भी लगता था. मैने बाहर निकल कर आसपास देखा तो कोई नही था, मै फिर अंदर आई और मैने अपने कपड़े उतारना शुरू किया. क्योंकि कोई साफ जगह नही थी तो मैने अपने कपड़े उतार कर दरवाजे कि पास ही रख दिया. मैं दरवाजे से थोड़ा अंदर खड़ी हो गई कि न तो दरवाजे से कोई मुझे देख सके न खिड़की से. मैने अपने स्तनो को मसलना शुरू किया, फिर निप्पल को उमेठना शुरू किया. जब कुछ ज्यादा ही आग महसूस होने लगी तो एक उंगली योनि के छेद में डाल कर मैथुन करने लगी. जैसे जैसे उंगली योनि के छेद में अंदर बाहर होने लगी, गीलापन बढ़ने लगा. मेरा बदन ऐठने लगा और आंखे खुद ब खुद ही बंद हो गई. मेरी उंगली की तेजी बढ़ती गई और एक समय पर मैने अपना यौवन रस छोड़ दिया.

मैने धीरे से अपनी आंखे खोली और पिछे मुड़ी. जैसे ही कपड़ो पर नजर गई दिल धक से रह गया. मेरे कपड़े नही थे. डर और चिंता का मिला जुला असर था मेरे ऊपर. कहां गये कपड़े, कौन ले गया मेरे कपड़े, घर कैसे जाऊंगी. अभी ये सोच ही रही थी कि ३ लड़के अंदर आ गये. हाथ मे सिग्रेट, और पहनावे से ही पता चल रहा था कि मवाली टाईप लड़के हैं. मैं हक्की बक्की खड़ी थी और बदन पर एक कपड़ा नही था. तीनो मुझे सर से पांव तक निहार रहे थे. जैसे ही एहसास हुआ मैने दोनो हाथो से अपने स्तन और योनि को छुपाया. मैने पुछा, "कौन हो तुम लोग? तुम लोग क्या कर रहे हो यहां?" एक ने जवाब दिया, "वही जिनके पास तेरे कपड़े है, और हम लोग तब से यहां है जब से तु अपने यार के साथ अंदर घुसी थी. जब अपने यार के साथ मजे ले रही थी तब भी यहीं थे और जब नंगी हो कर मजे ले रही थी, तब भी यही थे." मैने कहा, "प्लीज मेरे कपड़े मुझे लौटा दो." उसने कहा, "लौटा देंगे, लौटा देंगे, अब तुने मजा ले लिया, तेरे यार ने मजा ले लिया, थोड़ा मजा हम भी ले लेते है, फिर कपड़े ले लेना." मैने सर झुका कर कहा, "मैं ऐसी लड़की नही हूं, प्लीज मेरे कपड़े मुझे लौटा दो और मुझे जाने दो." उसने कहा, "ओ.के. जाना है तो जा सकती हो, हम जबरदस्ती नही करेंगे. पर हमारा कपड़े लौटाने का मन नही है. हम कपड़े तभी लौटाएंगे जब तेरे साथ मजे कर ले. हम बाहर ही बैठे है, जाना है तो पीछे से निकल जाना, और कपड़े चाहिए तो हमें बुला लेना." इतना कह कर वे लोग बाहर चले गये. मै तो बुरी फंसी थी, न बाहर जा सकती थी, न घर. रोने जैसा मन हो रहा था. क्या करू, इन लोगो की बात मानना भी तो आसान नही था. मैने आज तक अपना कौमार्य बचा कर रखा हुआ था. काफी सोचने के बाद मै बाहर की तरफ निकली. मैने बाहर झांक कर देखा तो उन लोगो को बाहर ही बैठे देखा. मैने चिल्ला कर कहा, "सुनो जरा! अंदर आना प्लीज." इतना कह कर मैं उसी कमरे मे वापस आ गई. १ मिनट मे वो अंदर आ गये. मैने सर झुका कर कहा, "मैं तैयार हूं, पर थोड़ा धीरे करना, आज से पहले किसी के साथ नही की हूं." एक ने कहा, "मतलब एक दम कुंवारी हो, प्योर माल." मैने हौले से सर हीला दिया. उसने कहा, "डरो नही, ऐसे माल को तो हम, आराम से इस्तेमाल करते है."

मैने धीरे से अपने दोनो हाथ नीचे कर लिया. तीनो मेरे पास आ गये और मुझे घेर कर खड़े हो गये. तीनो मेरे बदन को छुने लगे. मेरे स्तन, पीठ, गले, पुठ्ठे, जांघो का सहलाने लगे. मैं शर्म से गड़ी जा रही थी, नजरे निची रखे हुई थी. उनमे से दो ने मेरे स्तनो को थाम लिया और मसलने लगे. बीच बीच में मेरे निप्पल को मुंह मे ले कर चुसने लगते. एक ने मेरे चुतड़ो को और मेरी जांघो को सहलाना शुरू किया. बीच बीच में मेरे पीठ और कंधो को चुम लेता. लगभग १० मिनट तक ऐसे सी चलता रहा. फिर उन लोगो ने मुझे छोड़ा और एक ने मुझे धक्का देते हुए दीवार से पीठ के बल सटा दिया. वो खुद मुझ पर लद गया और मेरे दोनो स्तनो को दोनो हाथो मे थाम लिया और मसलने लगा. साथ ही मेरे होंठो को चुमने लगा. कभी मेरे निचले होंठो को अपने दांतो से काटता, अभी गले पर चुमता, कभी गालो को चुमता कभी चाटता, कभी निप्पल को चुसता, और अभी निप्पल पर दांत गड़ा देता. १० मिनट में अगल हुआ तो अगला मेरे पास आ गया और उसी की तरह करने लगा. लगभग २० मिनट में बाकी दोनो भी संतुष्ट हो गये और मुझे छोड़ कर अलग हो गये. एक ने कहा, "अब तेरी नथ उतारेंगे रानी, बस कुछ ही

पल में तु भी औरत बन जायेगी." मैं जानती थी कि वो क्या बोलना चाहते है पर मैने कोई जवाब नही दिया.

वो सब जल्दी जल्दी अपने कपड़े उतारने लगे. पुरे कपड़े उतार कर आपस मे बात करने लगे. फिर मेरे पास आये और एक गमछा जमीन पर बिछा कर मुझे उस पर लेटने को कहा. मै चुपचाप उस पर लेट गई. एक मेरे उपर आ गया और मेरी जांघो को फैला कर उसके बीच बैठ गया. उसने दोनो की तरफ देखा तो दोनो मेरे कंधो के पास आ कर बैठ गये और मेरी एक एक कलाई जोर से पकड़ ली. मै कुछ कहती इससे पहले ही एक ने मेरे जबड़ो को कस कर बंद कर लिया. जो लड़का मेरे जांघो के बीच बैठा था उसने अपना लण्ड मेरी योनि के दरार पर रखा और एक झटके से अंदर घुसा दिया. ऐसे लगा कि किसी ने गर्म सलाख अंदर घुसा दी है. चीखना चाहती थी पर मुंह बंद था. छटपटाना चाहती थी पर हाथ दोनो ने पकड़े हुए थे. पैर पटकने कि जैसे ही कोशिश की उसने मेरी जांघो को कस कर पकड़ लिया. मेरे आंखो से आंसु आ गये. और वो धीरे धीरे धक्के लगाने लगा. ५ मिनट के बाद ही कुछ राहत लगी तो मैने बदन ढीला छोड़ा. सब ने मेरे हाथ और मुंह छोड़ दिया और जो लड़का मेरे उपर था उसने धक्को की गति बढ़ा दी. मुझे भी अच्छा लगने लगा तो मै भी अपनी कमर तो उसके धक्को के लय मे लाने लगी. १५ मिनट के बाद उसने अपना वीर्य मेरे योनि में ही छोड़ दिया और उठ कर खड़ा हो गया. उसके हटते ही अगले ने जगह ले ली. उसने भी मेरी जांघे फैला कर अपना लण्ड मेरी योनि में डाला और धक्के लगाने लगा. उसने जल्दी ही गति पकड़ ली और १५ मिनट के बाद उसने भी अपना वीर्य मेरे योनि में ही छोड़ दिया और उठ कर खड़ा हो गया. अगले ने भी कुछ नया नही किया और १५ मिनट के बाद उसने अपना वीर्य मेरे योनि में ही छोड़ दिया और अलग हो गया.

उनमे से एक बाहर गया और मेरे कपड़े ले आया. मैं उठ कर खड़ी दो गई. मुझे पता चल रहा था कि चलने मे दर्द हो रहा था जैसे तैसे मैने अपने कपड़े पहने और घर को रवाना हुई. भविषय मे भी ऐसी कई गलती हुई पर ये गलती ऐसे थी जिस में मैने अपना कौमार्य खो दिया, वो भी ऐसे लड़को के हाथो जिनको मै जानती तक नही थी.